इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज।
ततखिण आवीने तेडी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरी सब मनोकामना पूर्ण करो और अपनी लाज बचाओ। तुरन्त ही आकर के बुला ले जाओ जिससे मेरे हृदय की अग्नि (भभक, हरवाड़) शान्त हो जाए (दुःख निकल जाए)।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १३१ ।।

खटरुती का कलस

राग प्रभाती

वचन वालाजीना वालेरा रे लागे।
मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे।
वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकूं निरवाण रे।। १ ।।

मेरे प्रीतम के वचन मुझे प्यारे लगते हैं और मीठे लगते हैं। इसलिए मुझे चर्चा के मीठे वचन सुनाओ जो तारतम वाणी के वचन हैं। अब मैं निश्चय ही नहीं छोडूंगी।

सुणिया जे सुन्दर तणा रे, न मूकिए एह वचन रे।
आटला दिवस में विचार न कीधो, नव लीधूं वचन नूं धन रे।। २ ।।

श्यामाजी (सुन्दरबाई) के जो वचन सुने हैं, उनको नहीं छोडूंगी। इतने दिन तक न तो मैंने विचार किया था और न इन वचनों को ग्रहण ही किया था।

घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे।। ३ ।।

हे मेरे धनी! बहुत दिनों तक आपके वचनों रूपी न्यामत को नहीं पहचाना। आपने कृपा करके मेरे जीव की आंखें खोलकर यह निधि दी है।

चरचा जे श्री मुख तणी, सुंदर वाण वचन रे।
एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे।। ४ ।।

हे मेरे धनी! मैंने आपके श्रीमुख से सुन्दर वचनों की चर्चा सुनी है। अब आप खुले दिल से उन वचनों पर मेरे से वार्तालाप करो!

पेर पेरनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत।
वृज रास ने घर तणी, मूने कहो वीतक वृतांत।। ५ ।।

आप तरह-तरह से मुझे समझाओ। तरह-तरह के दृष्टांत दो। ब्रज रास और घर की बीती बातों का वर्णन करो।

आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह।
तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगते प्रीछवो वली एह।। ६ ।।

हे वालाजी! सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के लिए जो आपने आडीका (चमत्कारिक) लीला की थी उसका विचार करके मुझे अच्छी तरह फिर से समझाना।

तारतम तणो विचार करो रे, पेहेलो फेरो थयो केही पेर।
केणी पेरे मनोरथ कीधां, जाग्या केही पेरे घेर।। ७ ।।

तारतम वाणी से विचार करके देखो। पहला फेरा (ब्रज, रास) किस तरह से हुआ। किस तरह से आपने हमारी चाहना पूर्ण की। उसके बाद कैसे अपने घर (परमधाम) में जागे।

आणे फेरे अमे केम करी आव्या, अने तमे आव्या छो केम।
तमे कोण ने तम मांहें कोण, मूने कहीने प्रीछवो वली एम।। ८ ।।

इस फेरे (तीसरा ब्रह्माण्ड) में हम किस तरह से आए और आप किस तरह से आए। आप कौन हैं तथा आपके अन्दर कौन है, मुझे फिर से अच्छी तरह कहकर समझाइए।

पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो वृज ने रास।
इंद्रावतीसूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।। ९ ।।

आप स्वयं धाम-धनी पधारे हैं। ब्रज रास की आड़ देते हो। इन्द्रावती से आपने यह भेद क्यों छिपा रखा है, इसका मुझे उत्तर दो। ब्रज रास में कृष्ण नाम के तन तो आपके रूप हैं, साक्षात् तो मेरे पास हो।

आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ।
दरपणनूं सूं काम पडे, ज्यारे पेहेरयूं ते कंकण हाथ।। १० ।।

अपनी पहचान कराने के बाद हे प्राणनाथ! हमें दर्पण दिखाते हो, अर्थात् आप ब्रज और रास के रूपों का सहारा क्यों लेते हो, जबकि आप साक्षात् प्राणनाथ हो। जिस तरह से हाथ में पहने कंकण (कंगन) को शीशे में फिर देखने की जरूरत नहीं होती, अर्थात् आपको साक्षात् देखकर ब्रज और रास के रूपों को याद करने की जरूरत नहीं है। अर्थात् श्री कृष्ण और राधा से अब हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

मूने अमल मायानो जोर हुतो, तमे ते माटे कीधो अंतर।
हवे तमे पडदा टाल्या रे वाला, आप छपसो केही पर।। ११ ।।

मुझे माया का नशा चढ़ा था। इसलिए आपने मेरे से अन्तर किया। अब आपने वह पर्दा हटा दिया है। अब आप किस तरह से छिपोगे?

आपोपूं ओलखावी करी रे, मूने दीधो वदेस।
अवगुण जे में कीधां मारा वाला, तेणी तमे हजी न मूको रीस।। १२ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर मुझे परदेसन कर दिया। हे मेरे धनी! जो अवगुण मैंने किए हैं, उनकी नाराजगी अभी तक क्यों नहीं छोड़ते?

मूने माया लेहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधां अवगुणो।
अंध थको ज्यारे पडे रे कुआमां, त्यारे केहो वांक तेहतणो।। १३ ।।

मुझे माया का अमल (नशा) बहुत अधिक था, इसलिए मैंने अवगुण किए। अन्धा जैसे कुएं में गिर पड़े तो उसका क्या दोष है?

तमे केहेसो ज्यारे तारतम सांभल्यूं, त्यारे अंध केहेवाय केम।
तेह तणो पडउत्तर दऊं, तमे सांभलो द्रढ करी मन।। १४ ।।

आप कहोगे कि तारतम ज्ञान समझने के बाद अन्धा कैसे कहा जाए? तो उसका उत्तर देती हूं। तुम दृढ़ मन से सुनो।

वचन सुण्यां ते ग्रह्या मन मांहें, जीवने मोहजल पूरी लेहेर।
तो दुख तमने देवंतां, जीवने न आव्यो वेहेर।। १५ ।।

आपसे जो वचन मैंने सुने वह मन में ग्रहण किए, परन्तु जीव माया के नशे (अमल) में बेहोश था। इसलिए आपको दु:खी करने में मेरे जीव को कुछ भी संकोच नहीं हुआ।

वली केहेसो जे निरदोष थाय छे, पण नथी थाती निरदोष कांई हूं।
धणी सामी बेसी आ मोहजलमां, लेखूं केणी विधे करूं।। १६ ।।

आप कहोगे कि अपने को बेगुनाह बना रही है। पर हे धनी! मैं अपने को बेगुनाह नहीं मानती। हे धनी ! आपके सामने इस मोहजल (भवसागर) में बैठी हूं तो इसका हिसाब क्या दूं (स्पष्टीकरण कैसे करूं) ?

हवे ने कहूं ते सांभलो वाला, हूं विनता वालाजी तमारी।
अवगुण जो अनेक होय मारा, तोहे तमे लेओ ने सुधारी।। १७ ।।

अब मैं कहती हूं, हे धनी! सुनो, मैं आपकी अंगना हूं। मेरे अनेक अवगुण हों तो भी आप सुधार लो।

जे में तमसूं कीधां रे अवगुण, तेणी तमे वालो छो रीस।
आपोपूं ओलखावी करी, तमे दीधो मूने वदेस।। १८ ।।

मैंने आपसे जो अवगुण किए हैं, उसका आप गुस्सा निकालते हो। आपने अपनी पहचान कराकर मुझे विदेश दे दिया।

एक पुरीमां आपण बेठा, मूने कीधी परदेस।
विरह तणी जे वातो मारा वाला, हूं तमने आवी कहेस।। १९ ।।

एक पुरी में (शहर में) ही हम बैठे हैं, फिर भी मुझे परदेश दे दिया। हे मेरे वालाजी! इस वियोग की बातें जब मैं आपके पास आऊंगी, तब करूंगी।

जे विरह तमे दीधो रे वाला, ते सिर ऊपर में सह्यो।
अवगुण साटे तमे ए दुख दीधा, हवे पाड केहेनो नव रह्यो।। २० ।।

हे धनी! आपने जो विरह दिया वह मैंने सहन किया। मेरे अवगुणों के बदले में आपने यह जुदाई का दु:ख दिया है। अब किसी का किसी पर कोई एहसान नहीं।

हवे हूं आविस तम पासे, तूं जाइस नाठो क्याहें।
तें छेतरी घणां दिन मूने आगे, ते वार बूठी त्याहें।। २१ ।।

अब मैं आपके पास आऊंगी। आप भागकर कहां जाओगे? आपने बहुत दिन मुझे ठगा है। अब वह समय निकल गया।

अंग उमंग न माये रे वाला, हवे तोसूं करूं केही पर।
पेहेलूं अंग भीडीने दाझ भाजूं, पछे तेडी जाऊं मारे मन्दिर।। २२ ।।

अब मेरे अंग में उमंग नहीं समाती है। अब आपसे क्या बर्ताव करूं? पहले चिपट कर अपने अंग की आग बुझाऊं। फिर पीछे अपने मन्दिर (हृदय रूपी घर) में लाऊं?

जिहां लगे पाड हुतो मारे माथे, तिहां लगे हुती ओसियाली।
हवे मारी पेर जो जो रे वाला, हूं न टलूं तूंथी टाली।। २३ ।।

जब तक मेरे सिर पर एहसान था, तब तक मैं शर्मिन्दा थी। अब मेरा तरीका देखना। मैं आपके हटाने पर भी नहीं हटूंगी।

हवे हूं जीतूं तूंने जोपे करी, में ओलखियो आधार।
में अनेक वार जीत्यो रे आगे, वलीने वसेके रे आवार।। २४ ।।

अब मैं आपको अच्छी तरह जीतूंगी। मैंने अपने धनी को पहचान लिया है। पहले भी अनेक बार मैं जीती हूं। अब फिर से इस बार भी जीतूंगी।

केही पेरे वाद करीस तूं मोसूं, तूं छे म्हारो जाण्यो।
जिहां जेणी पेरे कहीस रे वाला, तिहां आवीस मारो ताण्यो।। २५ ।।

तुम मुझसे किस तरह झगड़ा करोगे? मैं आपको अच्छी तरह से जानती हूं। हे वालाजी! जहां जिस तरह से कहूंगी वहां आप खिंचे चले आएंगे।

जो एक पग पर राखूं तूंने, तो हूं इंद्रावती नार।
दिन घणा तूं छपयो मोसूं, हवे नहीं छपी सके निरधार।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपको एक टांग पर खड़ा रखूं, तभी आपकी अंगना कहलाऊंगी। बहुत दिन तक आप मुझसे छिपते रहे। अब निश्चित ही आप नहीं छिप सकोगे।

हवे जेम नचवूं तेम नाचो रे वाला, आव्या इंद्रावतीने हाथ।
ते वसीकरण नी दोरिए बांधूं, जेम देखे सघलो साथ।। २७ ।।

जैसा नचाऊंगी वैसा ही आप नाचोगे। अब इन्द्रावती के हाथ आये हो। ऐसी वशीकरण की डोरी में बाधूंगी कि सब सुन्दरसाथ देखते ही रह जाएंगे।

जोइए कोंण मुकावे जोरावर, ते कोय देखाडो नार।
मारे मंदिर थकी कोण मुकावसे, वस मारे आव्या आधार।। २८ ।।

देखती हूं कौन ऐसी ताकतवर सखी है जो मेरे हाथ से आपको छुड़ाएगी। आप मेरे वश में आ गए हैं। इसलिए देखती हूं मेरे घर से (हृदय से) आपको कौन ले जाता है?

जे कोई सुंदरी होय रे जोरावर, तेणे सीखवुं वसीकरण वात।
विध विधनी तेणे विद्या देखाडूं, जेणे वस थाय प्राणनो नाथ।। २९ ।।

कोई सखी ताकतवर हो तो आओ। मैं वशीकरण का तरीका (ढंग) सिखाती हूं। तरह-तरह की विद्या करके दिखाऊंगी जिससे अपने प्राणनाथ वश में होते हैं।

देतां विद्या कोई जोर न दाखे, तो सखी बल करी मुकावसे केम।
इंद्रावतीने वस आव्या छो, हवे जेम जाणसे करसे तेम।। ३० ।।

विद्या सिखाते समय सीखने की ताकत नहीं दिखाती हो तो बल करके वालाजी को छुड़ाओगी कैसे? अब हे वालाजी! श्री इन्द्रावती के वश में आये हो। अब जैसा मैं चाहूंगी वैसा आप करोगे।

सेवा कंठमाला घालूं तेह सनंधनी, पोपट करूं नीलडे पांख।
प्रेमतणा पांजरा मांहें घाली, हूं थाऊं साख ने द्राख।। ३१ ।।

हे धनी! अपनी सेवा से आपके गले की माला बन जाऊंगी। आपको हरे पंखों वाला तोता बनाकर (पाल्तू तोता) अपने शरीर रूपी पिंजरे में बन्द कर दूंगी। मैं आपके भोजन के लिए पक्के आम और अंगूर बन जाऊंगी।

हवे हूं कहीस तेम तूं करीस, मूने विरह दीधो अति जोर।
तोहे तें मारी खबर न लीधी, में कीधा घणा बकोर।। ३२ ।।

अब जैसा मैं कहूंगी वैसा आप करोगे। आपने मुझे विरह की अग्नि में बहुत जलाया है। मैंने आपको बहुत पुकारा, फिर भी आपने मेरी खबर नहीं ली।

खार हवे ते हूं वालूं रे वाला, घणा दिन हुती रुदे झाल।
ज्यारे में तमने भीड्या जीवसूं, त्यारे रुदे ठरयूं तत्काल।। ३३ ।।

हे वालाजी! बहुत दिन तक मेरे हृदय में विरह की अग्नि जलती रही। इसलिए मैं उसका बदला ले रही हूं। जब मैं आपसे लिपट जाऊंगी तभी मेरे हृदय को शान्ति मिलेगी।

जीव सकोमल कूपल काढ्या, खिण नव लागी वार।
फूले रंग फल फलिया रे, ततखिण रंगे रंग्यो विनता आधार।। ३४ ।।

और जीवों में नई-नई कोपलें निकलीं (चाहना निकली)। जिनके निकलने में एक क्षण की भी देरी नहीं हुई। तुरन्त ही इस जीव रूपी वृक्ष में फूल और फल लग गए। मैं विनता (अंगना) आपके प्रेम में रंग गई।

इंद्रावतीने एकांते हाथ आव्या, हवे जो जो अमारो बल।
ते वसीकरण करूं रे तमने, जेणे अलगां न थाओ नेहेचल।। ३५ ।।

अब इन्द्रावती के हाथ एकान्त में आए हो। मेरी ताकत देखो। आपको ऐसे वशीकरण के बंध में बांधूंगी जिससे आप निश्चित ही छूट न सकोगे।

हवे अधखिण हूं अलगां न करूं, आतमाए लीधी आतम सूं बाथ।
जीत्यो में तूने जोर करी, देखतां सर्व साथ।। ३६ ।।

अब मेरी आत्मा अपने धनी से लिपट गई है (एकाकार हो गई है), इसलिए आधे क्षण के लिए भी अलग नहीं करूंगी। सब सुन्दरसाथ के देखते हुए मैंने आपको अपनी ताकत से जीता है।

तेजसूं तेज करूं रे मेलावो, जोतने जोत छे भेला।
अंग सदीवे छे रे एकठां, परआतम ने मेला।। ३७ ।।

हे धनी! आपके ज्ञान के दीपक से मैं अपने ज्ञान का दीपक जलाऊं। उस ज्ञान की ज्योति से ज्योति को मिलाऊं। हमारा और आपका तन परमधाम में सदा से इकट्ठे हैं। हमारी परात्म परमधाम में मिलकर बैठी हैं।

अनेक वासनाओं तमे ओलखिओ, पण में ओलख्यो धाम धणी।
तें मोसूं टाला घणुंए कीधां, पण में जीत्यो विध घणी।। ३८ ।।

हे धनी! आपने अनेक आत्माओं की पहचान की, परन्तु मैंने धाम के धनी की पहचान की। आपने मुझसे बचने के लिए बहुत उपाय किए। मैंने बहुत ढंग से आपको जीता।

वासना सकलने तमे परखो छो, जोई सर्वे ना चेहेन रे।
अंग ओलखी श्री धाम मधे, त्यारे देखो आंही ऊभी ऐन रे।। ३९ ।।

हे वालाजी! आप सब आत्माओं को खेल में उनकी रहनी देखकर पहचानते हो। आप परमधाम में उनकी परात्म को देखते हो और खेल में उनके तनों को देखते हो।

में तूंने परख्यो पूरे चेहेनें, अंग ओलख्यूं हूं अरधंग।
में तूंने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धनी हूं अभंग।। ४० ।।

पर हे धनी! मैंने आपको पूर्ण रूप से पहचान कर देखा, क्योंकि मैं आपकी अंगना हूं। हे राजजी महाराज! हमने आपको हर तरीके से जीता है, क्योंकि मैं आपकी अखण्ड अंगना हूं।

साथ सकलना वचन विचारी, चित्त ओलखो छो सर्वे जाण।
वचन पाधरा प्रगट कहे छे, जे पगलां भरियां प्रमाण।। ४१ ।।

आप सब सुन्दरसाथ के वचनों को विचार कर चित्त में ध्यान कर पहचानते हो। आपके वचनों से साफ जाहिर होता है कि आपने अभी तक जो आत्माएं परखी हैं उनको परखने का यही तरीका रहा है।

श्रीजीना वचन में विचारिया, निध लीधी वचनोनी सार।
विविध पेरे में तूंने रे वाला, हूं जीती धाम धणी आधार।। ४२ ।।

हे धनी! मैंने आपके वचनों का विचार किया और वचनों के सार में से मैंने अखण्ड (सच्ची) वस्तु ले ली। इस तरह से, हे धनी! मैंने आपको हर तरह से जीता है।

चौद भवन जे सुकजीए मथिया, वली पडदे मथिया ब्रह्मांड तीत।
तेहेनो सार तमे प्रगट करी रे, साथने दीधो रूडी रीत।। ४३ ।।

चौदह भुवनों को मथकर शुकदेवजी ने यहां का मिथ्या ज्ञान दिया। ब्रह्माण्ड से ऊपर बेहद का ज्ञान मथा, पर परदे में ही रहा, जाहिर नहीं हुआ। उन सबका सार आपने प्रकट करके सुन्दरसाथ को अच्छी तरह से दिया।

ते मां सारहूं तमतणों मथिया, तेहेनो सार लीधो आधार।
हूं धणियाणी श्री धाम धणीनी, में जीत्यो अनेक वार।। ४४ ।।

आपकी सार वाणी में से मैंने मंथन कर सार निकाला कि आप मेरे धाम के धनी हैं। मैं धाम धनी की अंगना हूं। इसलिए मैंने आपको अनेक बार जीता।

हवे चरणे लागी अंग भीडी इंद्रावती, मूने मारे धणिए कीधी सनाथ।
मनना मनोरथ पूरण करी, वाले लीधी पोताने साथ।। ४५ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में चिपट कर कहती हैं कि मेरे धनी ने मुझे सौभाग्यवती बना लिया और मेरे मन की सब चाहनाओं को पूर्ण करके अपने चरणों में ले लिया।

साथ हतो जे इंद्रावती पासे, वाले पूरी तेनी आस रे।
सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलिया ते रास प्रकास रे।। ४६ ।।

हवसा में श्री इन्द्रावतीजी के साथ जो दो और साथी थे, (सांवलिया ठाकुर और ऊधो ठाकुर) उनकी भी चाहना राजजी ने पूर्ण की। इस प्रकार हमारी सब चाहना पूर्ण हो गई। रास और प्रकाश का फल मिल गया अर्थात् धनी मिल गए।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। १७७ ।।